यदि रमजान आध्यात्मिकता है तो ईद व्यवहार में उतारी गई आध्यात्मिकता है। रमजान भीतरी तो ईद बाहरी सफर है। रमजान व्यक्तिगत स्तर पर जीने के लिए तैयार करता है और ईद हमें बताती है कि सामाजिक स्तर पर हम कैसे जीएं।

रमजान आध्यात्मिकता है तो ईद इसी का व्यावहारिक रूप

▪ मौलाना वहीदुद्दीन
इस्लाम के आध्यात्मिक विद्वान

सामाजीकरण हर समाज की आवश्यकता है, क्योंकि इसे बढ़ावा देने से सद्भाव और आपसी समझ निर्मित होती है। यह स्वस्थ सामाजिक जीवन के लिए जरूरी है, क्योंकि यह लोगों को आपस में जुड़े सुसंगत समूह के रूप में जीने को प्रोत्साहित करता है।

ऐसा सामाजिक व्यवहार अपनाने के कई तरीके हैं। एक प्रभावी तरीका पर्वों खासतौर पर धार्मिक उत्सवों का है। मूलतः कोई भी मेलजोल (गैदरिंग) सिर्फ एक मेलजोल होता है पर धार्मिक मेलजोल उसमें कुछ अतिरिक्त जोड़ता है। धर्म इसे पवित्रता देता है। ईद अल फित्र ऐसी ही सामाजिक परम्परा है।



मुस्लिम शव्वाल यानी हिजरा कैलेंडर के दसवें माह के पहले दिन ईद मनाते हैं, रमजान खत्म होने के ठीक बाद। जहां रमजान आध्यात्मिक तैयारी का माह है वहीं ईद रमजान की भावना का पहला प्रदर्शन है। ईद की शुरुआत सामूहिक नमाज से होती है, जो इस त्योहार को आध्यात्मिक दिशा देती है। नमाज अदा करने के बाद मुस्लिम अपने घरों से बाहर जाकर लोगों से मिलते हैं, जिनमें मुस्लिम व गैर मुस्लिम दोनों शामिल होते हैं। वे हर मिलने वाले को मुबारकबाद देते हैं। इस मौके पर नए पकड़े पहनना पवित्रता और स्वच्छता का द्योतक है।

मेरा जन्म 1925 में उत्तर प्रदेश के छोटे से गांव में हुआ था। उन दिनों ईद का जश्न बहुत सादा होता था, जीवन बहुत प्राकृतिक था और पूरी तरह कृषि पर आधारित था। यह वह वक्त था जब हम और वे जैसी कोई धारणा नहीं थी। मुझे याद है ईद हम मुस्लिम परम्पराओं के अनुसार मनाते थे और प्रकाश का उत्सव दिवाली मैं हिंदू समुदाय की परम्परा के मुताबिक मनाता था। मैं मानता हूं कि ये दोनों त्योहार हमारे भारतीय जीवन के अंग हैं। ईद आपसी संवाद को प्रोत्साहन देती है। संवाद विचार-विमर्श की ओर ले जाता है और विचार-विमर्श या बहस बौद्धिक विकास की ओर ले जाती है। उस दृष्टि से ईद के साथ अन्य त्योहार भी न सिर्फ संस्कृति के अंग हैं, बल्कि वे शिक्षा के स्रोत हैं और मानवीय मूल्यों को प्रोत्साहित करते हैं।

रमजान और ईद एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। यदि रमजान आध्यात्मिकता है तो ईद एक प्रकार की व्यवहार में उतारी गई आध्यात्मिकता है। रमजान भीतरी सफर है और ईद बाहरी सफर की तरह है। रमजान आपको व्यक्तिगत स्तर पर जीने के लिए तैयार करता है और ईद हमें बताती है कि सामाजिक स्तर पर हम कैसे जीएं। दोनों समान रूप से महत्वपूर्ण हैं।

ईद के मौके पर मुस्लिमों को सदका-ए-फित्र देना होता है। इसका उद्देश्य यह है कि वंचित तबका भी अन्य लोगों के साथ समानरूप से ईद मना पाए। सदका-ए-फित्र उस प्रकार के जीवन की अभिव्यक्ति है, जिसमें लोग अन्य लोगों के साथ मिल-बांटकर रहते हैं। हालांकि, सदका-ए-फित्र भाईचारे की भावना का एक दिन का व्यवहार है पर यह सार्वत्रिक भाईचारे की भावना को बढ़ावा देने की ट्रेनिंग का रूप है।

इस्लाम के पैगंबर ने ईद के दिन खैरात बांटने और गरीबों के लिए भोजन उपलब्ध कराने को आवश्यक बताया है। इसके पीछे रमजान के महीने में रोजे के दौरान किसी तरह का पाप करने के बदले में प्रायश्चित की भावना है। रमजान और ईद दोनों इस्लामी जीवन के दो भिन्न पहलू रेखांकित करते हैं। इस्लाम की शिक्षाओं के मुताबिक जीवन की दो पहलू होते हैं : एक इस दुनिया में जीवन और फिर यहां के आगे की दुनिया। इस दुनिया में हमें अपनी जिम्मेदारियां पूरी करनी होती हैं और हमारे कर्मों के लिए बाद की दुनिया में पुरस्कार का वादा है। रमजान के माह में अनुशासित जीवन पहले चरण का प्रतीक है और ईद का जश्न और खुशियां वह हैं, जिसकी अगली दुनिया में हमें उम्मीद है।